Mercredi 14 novembre 2012

HIN3A13a

(Expression orale)

Cours-7

Discuter pourquoi l'éducation de la femme est une priorité dans la société moderne.

शिक्षा-रोजगार में महिलाओं की स्थिति सुधरी

भाषा | नई दिल्ली, 18 नवम्बर 2011

महिलाएं आज हर क्षेत्र में प्रगति कर रहीं है और किसी भी मामले में पुरुषों से कम नहीं हैं. समाजशास्त्रियों sociologue का भी मानना है कि महिलाओं को शिक्षा और रोजगार emploi में समान अवसर दिए जाने के मामले में लोगों के नजरिये point de vue में काफी बदलाव आया है हालांकि स्वास्थ्य की दिशा में अब भी काफी कुछ किए जाने की जरूरत है.

सेंटर फॉर सोशल रिसर्च में निदेशक रंजना कुमारी ने कहा कि लड़कियों को पढ़ाने को लेकर लोगों का नजरिया काफी बदला है, खासकर प्राथमिक शिक्षा में. बहरहाल cependant अभी स्वास्थ्य की दिशा में काफी कुछ किए जाने की जरूरत है. उन्होंने कहा, 'पहले की अपेक्षा par rapport à शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आया है और उन्हें समान अवसर भी दिए जा रहे हैं. रोजगार की बात करें तो आज महिलाओं को हर क्षेत्र में कामकाज के अवसर मिल रहे हैं.'

रंजना ने कहा, 'पहले महिलाएं शिक्षा, नर्सिंग आदि के क्षेत्र में ही रोजगार के अवसर तलाशतीं थीं. नर्सिंग जैसे क्षेत्रों को तो महिलापरक रोजगार के क्षेत्रों में ही गिना जाता था लेकिन अब ये धारणाएं notion काफी हद तक टूट रहीं हैं. अब महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति présence दर्ज करा रहीं हैं. वे निचले स्तर से लेकर शीर्ष पद पर कार्यरत हैं.' ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षा के अवसर मुहैया कराए faire obtenir जाने के संबंध में रंजना ने कहा, 'ग्रामीण क्षेत्रों में भी बदलाव तो आया है लेकिन हां इसे संतोषजनक satisfaisant नहीं कहा जा सकता. गांवों में कई माता-पिता चाहते हैं कि वे अपनी बच्चियों को पढ़ाएं. हालांकि कई बार सामाजिक-आर्थिक कारणों raison से यह संभव नहीं हो पाता.' उन्होंने कहा कि लेकिन महिलाओं के स्वास्थ्य की दिशा में अब भी काफी कुछ किए जाने की जरूरत है.

रंजना ने कहा, 'महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर अब भी लोग उतने जागरुक averti नहीं हैं. यही कारण है कि महिला मृत्यु दर ज्यादा है.' उन्होंने कहा कि लड़कियों के स्वास्थ्य को लेकर समाज अब भी काफी उदासीन désintéressé है और इस क्षेत्र में सफलता के लिए जरूरी है कि लोग जागरुक हों. समाजशास्त्री समर पांडे ने इस बारे में कहा कि शिक्षा और रोजगार को लेकर लोगों के नजरिए में बदलाव तो आया है लेकिन यह परिवर्तन changement अधिकतम महानगरों में ही देखने को मिलता है.

उन्होंने कहा, 'बड़े शहरों में भले ही शिक्षा, रोजगार आदि को लेकर महिलाओं को बराबर अवसर दिए जा रहे हो लेकिन पूर्वांचल जैसे क्षेत्रों के कई इलाकों में अब भी स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है.' पांडे ने कहा, 'दूसरी ओर स्वास्थ्य और खानपान को लेकर भी बदलाव तो आया है लेकिन यह मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग तक ही सीमित restreint हैं. जिनके पास पर्याप्त suffisant भोजन है वे तो लड़के-लड़कियों में फर्क किए बिना इस मामले में समानता बरतते हैं लेकिन गरीब तबके classe sociale में जब किसी एक को पर्याप्त भोजन मुहैया कराने की बात आती है तो प्राथमिकता priorité लड़के को दी जाती है.'

उन्होंने कहा, 'यहां वास्तव में सवाल लिंग भेद से कम और आर्थिक स्थिति से ज्यादा जुड़ा है. इस स्तर पर समानता के लिए जरूरी है कि आर्थिक असमानता और गरीबी को दूर किया जाए. लड़कियों को पूरी तरह समानता दिलाने के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव जरूरी है और यह बिना आर्थिक समानता के नहीं आ सकता.'

उल्लेखनीय है कि अमेरिका में 19 नवंबर 'इक्वल अपॉर्चुनिटी डे' (equal opportunity day) के रूप में मनाया जाता है. अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के 'गॅटीस्बर्ग भाषण' की वषर्गांठ के अवसर पर यह दिन मनाया जाता है. पेन्सिल्वेनिया प्रांत के गॅटीस्बर्ग में 19 नंवबर 1863 को दिए एक इस ऐतिहासिक भाषण discours में लिंकन ने मानवों के समान अधिकारों और भेदभाव किए बिना सभी को बराबरी के अवसर दिए जाने की बात कही थी.